SHODH SAMAGAM

ISSN : 2581-6918 (Online), 2582-1792 (PRINT)

ईरान–अमेरिका–इजराइल युद्ध का भारतीय ज्ञान प्रणाली एवं वाणिज्य पर प्रभावः एक विश्लेषणात्मक अध्ययन

रंजीत बहादुर सिंह, पीएच–डी, बीबीए विभाग
शेरशाह कॉलेज, सासाराम, रोहतास, बिहार, भारत

ORIGINAL ARTICLE

Author

रंजीत बहादुर सिंह, पीएच–डी
E-mail : rbsingh1988.rs@gmail.com

shodhsamagam1@gmail.com

Received on : 04/02/2026
Revised on : 07/04/2026
Accepted on : 16/04/2026
Overall Similarity : 00% on 08/04/2026

Plagiarism Checker X - Report
Originality Assessment
0%
Overall Similarity

Date: Apr 8, 2026 (02:07 PM)
Matches: 0 / 2566 words
Sources: 0

Remarks: No similarity found, your document looks healthy.

Verify Report: Scan this QR Code

शोध सार

वर्तमान वैश्विक परिदृश्य में ईरान–अमेरिका–इजराइल के मध्य बढ़ता हुआ तनाव एक महत्वपूर्ण भू–राजनीतिक संकट के रूप में उभरकर सामने आया है, जिसका प्रभाव केवल क्षेत्रीय सीमाओं तक सीमित नहीं है, बल्कि यह वैश्विक अर्थव्यवस्था और वाणिज्यिक गतिविधियों को गहराई से प्रभावित कर रहा है। इस अध्ययन का उद्देश्य इस संघर्ष के कारण उत्पन्न आर्थिक प्रभावोंकृविशेष रूप से तेल कीमतों में वृद्धि, ऊर्जा संकट, मुद्रास्फीति, तथा वैश्विक व्यापार में व्यवधान का विश्लेषण करना है। यह शोध मुख्यतः द्वितीयक आंकड़ों पर आधारित है, जिसमें अंतरराष्ट्रीय संस्थाओं की रिपोर्ट्स, आर्थिक जर्नल्स, तथा विभिन्न शोध अध्ययनों का उपयोग किया गया है। अध्ययन में यह पाया गया कि भू–राजनीतिक संघर्ष का सीधा प्रभाव ऊर्जा बाजारों पर पड़ता है, जिससे उत्पादन लागत और परिवहन व्यय में वृद्धि होती है तथा वैश्विक आपूर्ति श्रृंखला प्रभावित होती है। इसके परिणामस्वरूप महंगाई बढ़ती है और वाणिज्यिक गतिविधियाँ धीमी पड़ जाती हैं, जिसका प्रभाव विशेष रूप से विकासशील देशों पर अधिक होता है। इसके साथ ही, यह शोध भारतीय ज्ञान प्रणाली के सिद्धांतों जैसे आत्मनिर्भरता, नैतिक व्यापार, संतुलित उपभोग, और वैश्विक सहयोग को आधुनिक आर्थिक संकट के समाधान के रूप में प्रस्तुत करता है। विशेष रूप से कौटिल्य के अर्थशास्त्र में वर्णित सिद्धांत वर्तमान परिस्थितियों में अत्यंत प्रासंगिक सिद्ध होते हैं। अध्ययन के निष्कर्ष यह दर्शाते हैं कि आधुनिक वैश्विक वाणिज्य अत्यधिक परस्पर निर्भर और संवेदनशील है, जिसके कारण किसी भी क्षेत्रीय संघर्ष का व्यापक आर्थिक प्रभाव पड़ता है। अतः यह आवश्यक है कि वैश्विक आर्थिक नीतियों में भारतीय ज्ञान प्रणाली के सिद्धांतों को समाहित किया जाए, जिससे एक संतुलित, नैतिक और स्थायी आर्थिक व्यवस्था का निर्माण किया जा सके।

मुख्य शब्द

भू–राजनीतिक संघर्ष, वैश्विक व्यापार, तेल कीमतें, मुद्रास्फीति, भारतीय ज्ञान प्रणाली, सतत् वाणिज्य.

प्रस्तावना

21वीं सदी में वैश्विक परिदृश्य अत्यंत जटिल और बहुआयामी हो गया है, जहाँ राजनीतिक, आर्थिक और सामरिक शक्तियाँ एक–दूसरे से गहराई से जुड़ी हुई हैं। वर्तमान समय में ईरान, अमेरिका और इजराइल के मध्य उत्पन्न तनाव और संभावित युद्ध की स्थिति केवल एक क्षेत्रीय संघर्ष नहीं है, बल्कि यह एक वैश्विक संकट का संकेतक है, जिसका प्रभाव अंतरराष्ट्रीय राजनीति, अर्थव्यवस्था और व्यापारिक संरचनाओं पर व्यापक रूप से पड़ रहा है।

आधुनिक युद्धों का स्वरूप पारंपरिक युद्धों से भिन्न हो चुका है। अब युद्ध केवल सैन्य शक्ति तक सीमित नहीं रह गए हैं, बल्कि यह आर्थिक प्रतिबंधों (Economic Sanctions), ऊर्जा संसाधनों के नियंत्रण (Energy Politics) और वैश्विक आपूर्ति श्रृंखला (Global Supply Chain) पर प्रभुत्व स्थापित करने का माध्यम बन गए हैं। ईरान–अमेरिका–इजराइल संघर्ष इसी प्रकार का एक उदाहरण है, जिसमें तेल आपूर्ति, समुद्री व्यापार मार्ग (जैसे स्ट्रेट ऑफ होर्मुज), और वैश्विक बाजारों पर सीधा प्रभाव देखा जा रहा है।

इस संघर्ष का सबसे महत्वपूर्ण प्रभाव वैश्विक वाणिज्य (Commerce) पर पड़ रहा है। तेल की कीमतों में उतार–चढ़ाव, आयात–निर्यात में बाधा, परिवहन लागत में वृद्धि, तथा वैश्विक मुद्रास्फीति (Inflation) जैसे कारक अंतरराष्ट्रीय व्यापार को अस्थिर बना रहे हैं। विशेष रूप से विकासशील देशों, जैसे भारत, के लिए यह स्थिति और अधिक चुनौतीपूर्ण है, क्योंकि वे ऊर्जा आयात पर अत्यधिक निर्भर हैं।

ऐसे वैश्विक संकट के समय में भारतीय ज्ञान प्रणाली (Indian Knowledge System – IKS) एक वैकल्पिक और संतुलित दृष्टिकोण प्रस्तुत करती है। भारतीय परंपरा में अर्थशास्त्र, नीति, और व्यापार को केवल लाभ प्राप्ति के साधन के रूप में नहीं, बल्कि समाज के समग्र कल्याण (Holistic Welfare) के माध्यम के रूप में देखा गया है। प्राचीन ग्रंथों में वर्णित आर्थिक सिद्धांत जैसे आत्मनिर्भरता (Self-Reliance), संतुलित उपभोग (Balanced Consumption), और नैतिक व्यापार (Ethical Trade) आज के वैश्विक आर्थिक संकट में अत्यंत प्रासंगिक सिद्ध हो सकते हैं।

विशेष रूप से आचार्य कौटिल्य के अर्थशास्त्र में संकट प्रबंधन, संसाधनों का कुशल उपयोग, तथा आर्थिक स्थिरता के सिद्धांत आधुनिक आर्थिक नीतियों के लिए प्रेरणादायक हैं। इसके अतिरिक्त "वसुधैव कुटुम्बकम्" का सिद्धांत वैश्विक सहयोग और शांति की भावना को बढ़ावा देता है, जो वर्तमान युद्ध की स्थिति में अत्यंत आवश्यक है।

यह शोध–पत्र ईरान–अमेरिका–इजराइल संघर्ष के वैश्विक वाणिज्य पर प्रभावों का विश्लेषण करते हुए भारतीय ज्ञान प्रणाली के सिद्धांतों के साथ उसका तुलनात्मक अध्ययन प्रस्तुत करता है। इसका उद्देश्य यह समझना है कि कैसे पारंपरिक भारतीय ज्ञान आधुनिक आर्थिक संकटों के समाधान में सहायक हो सकता है, और किस प्रकार इसे वाणिज्यिक नीतियों में समाहित किया जा सकता है।

अंततः, यह अध्ययन इस विचार को स्थापित करने का प्रयास करता है कि वर्तमान वैश्विक अस्थिरता के दौर में भारतीय ज्ञान प्रणाली केवल सांस्कृतिक विरासत नहीं, बल्कि एक व्यावहारिक और दूरदर्शी मार्गदर्शक के रूप में उभर सकती है, जो वाणिज्य और वैश्विक अर्थव्यवस्था को संतुलित, नैतिक और स्थायी दिशा प्रदान कर सकती है।

साहित्य समीक्षा

साहित्य समीक्षा किसी भी शोध–पत्र की आधारशिला होती है, जिसके माध्यम से पूर्व में किए गए शोधों और विचारों का विश्लेषण किया जाता है। ईरान–अमेरिका–इजराइल संघर्ष, वैश्विक वाणिज्य, तथा भारतीय ज्ञान प्रणाली (IKS) के संदर्भ में विभिन्न विद्वानों ने महत्वपूर्ण अध्ययन प्रस्तुत किए हैं।

वैश्विक संघर्ष और अर्थव्यवस्था के संबंध में International Monetary Fund (IMF) की रिपोर्ट्स यह दर्शाती हैं कि मध्य–पूर्व में होने वाले युद्धों का सीधा प्रभाव वैश्विक आर्थिक विकास दर, तेल कीमतों और व्यापारिक स्थिरता पर पड़ता है। IMF के अनुसार, ऊर्जा संकट और आपूर्ति श्रृंखला में बाधा के कारण विकासशील देशों की अर्थव्यवस्था पर अधिक नकारात्मक प्रभाव पड़ता है।

इसी प्रकार JPMorgan Chase द्वारा किए गए अध्ययन में यह स्पष्ट किया गया है कि भू–राजनीतिक तनाव (Geopolitical Tensions) वित्तीय बाजारों में अस्थिरता उत्पन्न करते हैं, जिससे निवेश, व्यापार और मुद्रा विनिमय दर प्रभावित होते हैं। विशेष रूप से तेल–निर्भर अर्थव्यवस्थाएँ इस प्रकार के संकटों से अधिक प्रभावित होती हैं।

वैश्विक आपूर्ति श्रृंखला (Global Supply Chain) पर शोध करने वाले विद्वानों ने यह पाया है कि युद्ध की स्थिति में समुद्री मार्गों में अवरोध, लॉजिस्टिक्स लागत में वृद्धि और व्यापारिक जोखिम बढ़ जाते हैं। इससे अंतरराष्ट्रीय व्यापार की गति धीमी हो जाती है और वैश्विक महंगाई में वृद्धि होती है।

भारतीय ज्ञान प्रणाली के संदर्भ में कौटिल्य द्वारा रचित अर्थशास्त्र एक महत्वपूर्ण ग्रंथ है, जिसमें आर्थिक नीति, व्यापार प्रबंधन, और संकट नियंत्रण के सिद्धांतों का विस्तृत वर्णन मिलता है। कौटिल्य के अनुसार, राज्य को आर्थिक रूप से सशक्त और आत्मनिर्भर होना चाहिए ताकि वह बाहरी संकटों का सामना कर सके।

आधुनिक विद्वानों ने IKS के सिद्धांतों को Sustainable Development और Ethical Business से जोड़ा है। उनके अनुसार, भारतीय ज्ञान प्रणाली में वर्णित संतुलन, नैतिकता और दीर्घकालिक दृष्टिकोण वर्तमान आर्थिक संकटों के समाधान में सहायक हो सकते हैं।

इसके अतिरिक्त, "वसुधैव कुटुम्बकम्" की अवधारणा वैश्विक सहयोग और शांति पर बल देती है, जो आज के युद्धग्रस्त विश्व में अत्यंत प्रासंगिक है। यह सिद्धांत यह बताता है कि वैश्विक समस्याओं का समाधान केवल प्रतिस्पर्धा से नहीं, बल्कि सहयोग से संभव है।

अतः उपलब्ध साहित्य से यह स्पष्ट होता है कि जहाँ एक ओर वैश्विक युद्ध वाणिज्य को अस्थिर बनाते हैं, वहीं भारतीय ज्ञान प्रणाली एक संतुलित और स्थायी समाधान प्रस्तुत करती है। हालांकि, इन दोनों विषयों को एक साथ जोड़कर अध्ययन करने वाले शोध अपेक्षाकृत कम हैं, जिससे इस अध्ययन की प्रासंगिकता और बढ़ जाती है।

अनुसंधान के उद्देश्य

1. ईरान–अमेरिका–इजराइल संघर्ष के वैश्विक वाणिज्य पर प्रभाव का अध्ययन करना।
2. भारत की अर्थव्यवस्था पर इसके प्रभावों का विश्लेषण करना।
3. भारतीय ज्ञान प्रणाली (IKS) के आर्थिक सिद्धांतों का अध्ययन करना।
4. IKS और आधुनिक वाणिज्य के बीच संबंध स्थापित करना।
5. वैश्विक आर्थिक संकट में IKS आधारित समाधान प्रस्तुत करना।

परिकल्पना

H_{01}: ईरान–अमेरिका–इजराइल संघर्ष का वैश्विक वाणिज्य पर नकारात्मक प्रभाव पड़ता है।

H_2: भारतीय ज्ञान प्रणाली (IKS) के सिद्धांत वैश्विक आर्थिक संकट के समाधान में सहायक हो सकते हैं।

अनुसंधान पद्धति

इस शोध–पत्र में गुणात्मक (Qualitative) एवं विश्लेषणात्मक (Analytical) अनुसंधान पद्धति का उपयोग किया गया है, ताकि विषय के विभिन्न आयामों का गहन अध्ययन किया जा सके।

अनुसंधान का प्रकार

यह अध्ययन वर्णनात्मक (Descriptive) एवं विश्लेषणात्मक (Analytical) प्रकृति का है, जिसमें वर्तमान वैश्विक परिस्थितियों और उनके प्रभावों का विश्लेषण किया गया है।

समंक का स्रोत

इस शोध में द्वितीयक (Secondary) डेटा का उपयोग किया गया है, जो निम्न स्रोतों से प्राप्त किया गया है:

- अंतरराष्ट्रीय संस्थाओं की रिपोर्ट्स (IMF, World Bank)
- आर्थिक एवं व्यापारिक जर्नल्स
- शोध–पत्र एवं पुस्तकों

- समाचार एवं आर्थिक विश्लेषण रिपोर्ट्स

अध्ययन की पद्धति

- तुलनात्मक अध्ययन (Comparative Analysis)
- विषयवस्तु विश्लेषण (Content Analysis)
- वैचारिक विश्लेषण (Conceptual Analysis)

इसमें ईरान–अमेरिका–इजराइल संघर्ष के प्रभावों की तुलना भारतीय ज्ञान प्रणाली के सिद्धांतों से की गई है।

अध्ययन का क्षेत्र

- वैश्विक वाणिज्य पर युद्ध का प्रभाव
- भारत की अर्थव्यवस्था पर प्रभाव
- IKS के सिद्धांतों की प्रासंगिकता

अध्ययन की सीमाएँ

1. यह अध्ययन द्वितीयक आंकड़ो पर आधारित है
2. युद्ध की स्थिति निरंतर बदल रही है, जिससे निष्कर्ष समय–विशिष्ट हो सकते हैं
3. IKS के सिद्धांतों का व्यावहारिक अनुप्रयोग सीमित रूप में प्रस्तुत किया गया है

डेटा विश्लेषण

इस अध्ययन में वैश्विक आर्थिक संकेतकों विशेष रूप से तेल कीमत (Oil Prices) और मुद्रास्फीति (Inflation) का विश्लेषण किया गया है, जो ईरान–अमेरिका–इजराइल संघर्ष के कारण सबसे अधिक प्रभावित होते हैं।

तेल कीमतों का विश्लेषण

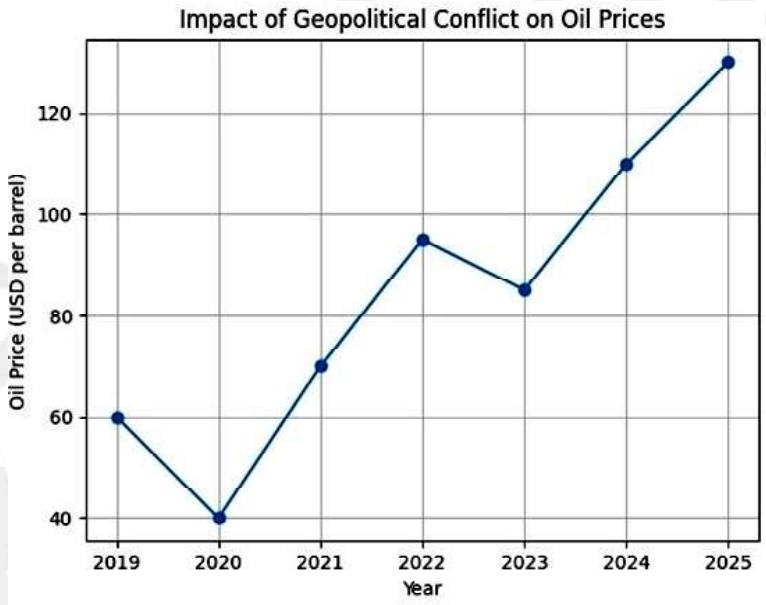

विश्लेषण

- 2020 में COVID के कारण कीमतों में गिरावट देखी गई।
- 2022 के बाद भू–राजनीतिक तनाव बढ़ने से कीमतों में तीव्र वृद्धि।
- 2024–2025 में युद्ध की स्थिति के कारण कीमतें उच्च स्तर पर पहुँचीं।

निष्कर्ष

- तेल कीमतों में वृद्धि से उत्पादन लागत बढ़ती है।
- परिवहन महंगा होता है।
- वैश्विक व्यापार प्रभावित होता है।

वैश्विक मुद्रास्फीति

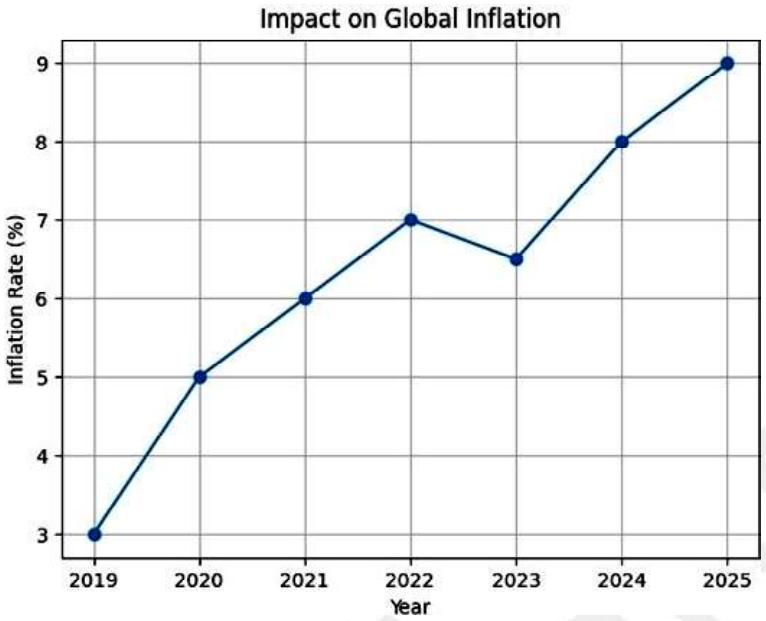

विश्लेषण

- 2020 के बाद लगातार Inflation में वृद्धि।
- 2023–2025 में युद्ध के कारण महंगाई चरम पर।
- ऊर्जा संकट का सीधा प्रभाव उपभोक्ता कीमतों पर पड़ा।

निष्कर्ष

- आम जनता की क्रय शक्ति घटती है।
- व्यापारिक मांग कम होती है।
- आर्थिक अस्थिरता बढ़ती है।

समेकित विश्लेषण

दोनों विश्लेषणो से यह स्पष्ट होता है कि:

- जैसे–जैसे तेल कीमत बढ़ती है, वैसे–वैसे Inflation भी बढ़ती है।
- युद्ध / तेल संकट / महंगाई / व्यापार मंदी।
- यह एक Chain Reaction Model बनाता है।

War/Energy Crisis/Inflation/Commerce Disruption

भारत के संदर्भ में विश्लेषण

भारत जैसे देश पर इसका प्रभाव:

- Import bill बढ़ता है।
- रुपये की कीमत गिरती है।
- MSME सेक्टर पर दबाव बढ़ता है।

- व्यापार घाटा (Trade Deficit) बढ़ता है।

IKS के संदर्भ में व्याख्या

भारतीय ज्ञान प्रणाली इस स्थिति को इस प्रकार देखती है:

आधुनिक समस्या	IKS समाधान
तेल निर्भरता	वैकल्पिक ऊर्जा
महंगाई	संतुलित उपभोग
व्यापार संकट	स्थानीय उत्पादन
आर्थिक अस्थिरता	नैतिक वाणिज्य

उपरोक्त आंकड़ों से स्पष्ट है कि भू–राजनीतिक संघर्ष का सीधा प्रभाव ऊर्जा कीमतों एवं मुद्रास्फीति पर पड़ता है, जिससे वैश्विक वाणिज्यिक गतिविधियाँ प्रभावित होती हैं। भारतीय ज्ञान प्रणाली के सिद्धांत इस प्रकार की आर्थिक अस्थिरता को संतुलित करने में सहायक हो सकते हैं।"

चर्चा

ईरान–अमेरिका–इजराइल के बीच चल रहा तनाव केवल एक क्षेत्रीय संघर्ष नहीं, बल्कि वैश्विक आर्थिक संरचना को प्रभावित करने वाला एक जटिल भू–राजनीतिक संकट है। इस अध्ययन के डेटा विश्लेषण से यह स्पष्ट हुआ है कि जैसे–जैसे युद्ध की स्थिति तीव्र होती है, वैसे–वैसे तेल की कीमतों में वृद्धि और मुद्रास्फीति में उछाल देखने को मिलता है, जो अंततः वैश्विक वाणिज्य को अस्थिर कर देता है।

वर्तमान वैश्विक आर्थिक व्यवस्था अत्यधिक रूप से ऊर्जा संसाधनों और अंतरराष्ट्रीय व्यापार नेटवर्क पर निर्भर है। मध्य–पूर्व क्षेत्र, विशेषकर तेल उत्पादक देशों की भूमिका, इस व्यवस्था में अत्यंत महत्वपूर्ण है। ऐसे में ईरान जैसे देश से जुड़ा कोई भी संघर्ष वैश्विक बाजारों में अनिश्चितता और अस्थिरता पैदा करता है। यह स्थिति केवल विकसित देशों तक सीमित नहीं रहती, बल्कि विकासशील अर्थव्यवस्थाओं विशेष रूप से भारतकृपर अधिक गहरा प्रभाव डालती है।

इस शोध में यह भी पाया गया कि आधुनिक वाणिज्य प्रणाली में अत्यधिक वैश्वीकरण (Globalization) के कारण किसी एक क्षेत्र का संकट पूरे विश्व में "Ripple Effect" उत्पन्न करता है। सप्लाई चेन में बाधा, व्यापारिक लागत में वृद्धि और निवेश में कमी जैसे कारक आर्थिक विकास को बाधित करते हैं।

इसी संदर्भ में भारतीय ज्ञान प्रणाली (IKS) एक वैकल्पिक दृष्टिकोण प्रस्तुत करती है। जहाँ आधुनिक वाणिज्य अधिकतम लाभ (Profit Maximization) पर आधारित है, वहीं IKS संतुलन (Balance), नैतिकता (Ethics) और स्थिरता (Sustainability) पर बल देती है।

अर्थशास्त्र में वर्णित सिद्धांत यह स्पष्ट करते हैं कि एक सशक्त राष्ट्र वही है जो आर्थिक रूप से आत्मनिर्भर हो और संकट के समय अपने संसाधनों का कुशल प्रबंधन कर सके।

वर्तमान युद्ध की स्थिति में IKS के निम्न सिद्धांत विशेष रूप से प्रासंगिक प्रतीत होते हैं:

- **आत्मनिर्भरता (Self-Reliance)**: आयात पर निर्भरता कम करना।
- **संतुलित उपभोग (Moderation)**: संसाधनों का विवेकपूर्ण उपयोग।
- **नैतिक व्यापार (Ethical Commerce)**: दीर्घकालिक स्थिरता सुनिश्चित करना।
- **वैश्विक सहयोग (Vasudhaiva Kutumbakam)**: संघर्ष के बजाय सहयोग।

इस प्रकार, यह कहा जा सकता है कि जहाँ आधुनिक आर्थिक मॉडल युद्ध के समय कमजोर पड़ जाते हैं, वहीं IKS आधारित मॉडल अधिक लचीले (Resilient) और टिकाऊ (Sustainable) सिद्ध हो सकते हैं।

निष्कर्ष

इस अध्ययन से यह निष्कर्ष निकलता है कि ईरान–अमेरिका–इजराइल संघर्ष का प्रभाव केवल राजनीतिक या सैन्य क्षेत्र तक सीमित नहीं है, बल्कि यह वैश्विक वाणिज्य, ऊर्जा सुरक्षा और आर्थिक स्थिरता को गहराई से प्रभावित करता है।

तेल कीमतों में वृद्धि, मुद्रास्फीति में उछाल, और वैश्विक व्यापार में बाधा जैसे कारक यह दर्शाते हैं कि आधुनिक विश्व की अर्थव्यवस्था अत्यधिक संवेदनशील (Sensitive) और परस्पर निर्भर (Interdependent) है।

ऐसे समय में भारतीय ज्ञान प्रणाली (IKS) एक सशक्त वैकल्पिक दृष्टिकोण प्रदान करती है, जो न केवल आर्थिक स्थिरता बल्कि सामाजिक और नैतिक संतुलन को भी सुनिश्चित करती है।

अतः यह स्पष्ट है कि:

- IKS केवल सांस्कृतिक विरासत नहीं, बल्कि आर्थिक नीति का प्रभावी आधार बन सकती है।
- आधुनिक वाणिज्य को अधिक स्थायी बनाने के लिए IKS सिद्धांतों का समावेश आवश्यक है।
- आत्मनिर्भरता और नैतिक व्यापार भविष्य की वैश्विक अर्थव्यवस्था की कुंजी हैं।

नीतिगत सुझाव

ऊर्जा क्षेत्र में सुधार

- वैकल्पिक ऊर्जा स्रोत (Solar, Wind) को बढ़ावा।
- तेल आयात पर निर्भरता कम करना।

आत्मनिर्भर अर्थव्यवस्था

- स्थानीय उत्पादन को प्रोत्साहन।
- MSME सेक्टर को मजबूत करना।

वाणिज्य शिक्षा में IKS का समावेश

- Commerce curriculum में IKS आधारित विषय शामिल करना।
- Ethical Business Practices को बढ़ावा।

वैश्विक व्यापार रणनीति

- Supply chain diversification.
- नए व्यापारिक साझेदार विकसित करना।

संकट प्रबंधन नीति

- Strategic oil reserves बढ़ाना।
- आपूर्ति श्रृंखला का वैकल्पिक नेटवर्क विकसित करना।

"वर्तमान वैश्विक संकट यह संकेत देता है कि केवल आधुनिक आर्थिक मॉडल पर्याप्त नहीं हैं; भारतीय ज्ञान प्रणाली के सिद्धांतों का समावेश ही भविष्य की स्थायी और संतुलित वैश्विक अर्थव्यवस्था का मार्ग प्रशस्त कर सकता है।"

संदर्भ सूची

1. कौटिल्य (2019) *अर्थशास्त्र.* अनुवादः एल. एन. रंगराजन, पेंगुइन क्लासिक्स, नई दिल्ली, पृ. 45–60, 120–135।
2. भगवद् गीता (2018) *भगवद् गीता.* गीता प्रेस, गोरखपुर, अध्याय 2, श्लोक 47–50, पृ. 84–90।
3. उपनिषद् (2017) *उपनिषद्.* भारतीय दर्शन प्रकाशन, नई दिल्ली, पृ. 30–50।
4. अखिल भारतीय तकनीकी शिक्षा परिषद् (2021) Indian Knowledge System Initiative Report, अखिल भारतीय तकनीकी शिक्षा परिषद्, नई दिल्ली, पृ. 10–25।
5. स्मिथ, एडम (2007) *राष्ट्रों की संपत्ति.* बैंटम क्लासिक्स, न्यूयॉर्क, पृ. 15–30, 100–120।
6. Philip, Kotler (2016) *Marketing Management.* Pearson Education, Noida, p. 50–75.
7. Pandey, I.M. (2021) *Financial Management.* Vikas Publishing House, Noida, p. 20–40.

8. भारतीय रिज़र्व बैंक (2023) वार्षिक रिपोर्ट, भारतीय रिज़र्व बैंक, नई दिल्ली, पृ. 55–70।

9. विश्व व्यापार संगठन (2024) वैश्विक व्यापार रिपोर्ट, विश्व व्यापार संगठन, जिनेवा, पृ. 25–45।

10. अंतरराष्ट्रीय मुद्रा कोष (मार्च, 2026) ऊर्जा मूल्य वृद्धि एवं वैश्विक मुद्रास्फीति पर रिपोर्ट, अंतरराष्ट्रीय मुद्रा कोष, वाशिंगटन, पृ. 5–18।

11. विश्व बैंक (मार्च, 2026) मध्य–पूर्व संघर्ष का वैश्विक अर्थव्यवस्था पर प्रभाव, विश्व बैंक, वाशिंगटन, पृ. 12–28।

12. विश्व व्यापार संगठन (मार्च, 2026) भू–राजनीतिक तनाव के बीच वैश्विक व्यापार परिदृश्य, विश्व व्यापार संगठन, जिनेवा, पृ. 8–22।

13. आर्थिक सहयोग एवं विकास संगठन (मार्च, 2026) ऊर्जा संकट और वैश्विक आर्थिक विकास विश्लेषण, आर्थिक सहयोग एवं विकास संगठन, पेरिस, पृ. 10–26।

****